

Birthday Puja

Date : 21st March 2002
Place : Delhi
Type : Puja
Speech : Hindi & English
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 03
English	13 - 17
Marathi	-

II Translation

English	18 - 19
Hindi	04 - 12
Marathi	20 - 23

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari



आप इसको महसूस कर सकते हैं। इसको जान सकते हैं कि ये प्यार, परमात्मा का प्यार, परमात्मा की शक्ति सिर्फ प्यार है और प्यार ही की शक्ति है जो कार्यान्वित होती है। हम लोग इसे समझ नहीं पाते। किसी से नफरत करना, किसी के प्रति दुष्ट भाव रखना, किसी से झगड़ा करना, ये तो बहुत ही गिरी हुई बात है। आप तो सहजयोगी हैं, आपके मन में सिर्फ प्यार के और कुछ भी नहीं होना चाहिए।

अपने देश में आजकल जो आफत मची है, इसको देखते हुए समझ में नहीं आता है कि धर्म के नाम पर इतना प्रकाण्ड रौरव इंसान ने क्यों खड़ा कर दिया? इसकी क्या जरूरत थी? एक चीज शुरू होती है फिर इसकी प्रतिक्रिया आती है और प्रतिक्रिया शुरुआत की एक क्रिया से भी बढ़कर होती है। इस तरह से परमात्मा का जो भी आपको अनुभव है वो कम होता जाता है। अब समझने की कोशिश करना चाहिए कि हम प्यार को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं, प्यार को हम कैसे दिखा सकते हैं और उसको हम कैसे पनपा सकते हैं?

मैं देख रही हूँ कि ये सारे प्यार की महिमा कैसे फैल गई, कहाँ से कहाँ पहुँच गई, कितने लोगों तक, इसकी खबर ही नहीं है! किन्तु इसका पूरा शास्त्र समझ में आ गया। प्यार का भी कोई शास्त्र हो सकता है? प्यार का कोई शास्त्र नहीं। प्यार जो है एक महामण्डल की तरह सब दूर छाया हुआ है। इसका एहसास हमें नहीं, उसे हम जानते नहीं। लेकिन परमात्मा का प्यार, ये तो सारे दूर, सारी सृष्टि में, सारे संसार में, हरेक देश में फैला हुआ है। आपके आत्मसाक्षात्कार होने के बाद ही

सबसे पहले तो हमें अपने बच्चों की ओर ध्यान देना चाहिए। हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं? उसको किसी ने गर एक थप्पड़ मारी तो क्या हम कहते हैं जाकर उसे मारो, उल्टे अगर आप उसे समझाएं कि

कोई बात नहीं, नासमझ है, उसने तुम्हें मारा तो ठीक हो जाएगा। वो फिर से दोस्ती कर लेगा। क्योंकि बच्चे का हृदय जो है बहुत सरल,

अबोध होता है। एक पल में वो ठीक हो जाएगा। फिर उसको गर समझाया जाए कि बेटे देखो तुमको वो मारता है, ये बुरी बात है, फिर तुम भी बुरी बात मत करो। बच्चा समझ जाएगा कि मार पीट अच्छी चीज़ नहीं है। ये बचपन से ही चीज़ बननी



है। बचपन से ही बच्चों को समझाया जाए कि तुम मुसलमान हो या तुम हिन्दू हो या तुम फलाना हो, या तुम दिकाना हो, इससे बच्चे को यही समझ में नहीं आता है कि देखने में तो मैं इन्हीं के जैसा हूँ। मेरा

नाक, नक्श, मुँह तो सब तो वही है, फिर इस तरह से क्यों समझा रहे हैं, इस तरह से मुझे ये क्यों लोग करते हैं?

तो ये घृणा, और ये जो सारी बातें हैं,

लालच, ये सब हमारे अन्दर की दुष्ट प्रवृत्तियाँ हैं और ये प्रवृत्तियाँ हमको जो आती हैं वो सहजयोग से नष्ट हो जानी चाहिए, पूर्णतया जानी चाहिए। तभी आपको समझ में आएगा कि परमात्मा क्या है, और हम क्या हैं?

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari



मैं इन्हें प्रेम के विषय में बता रही हूँ, सर्वशक्तिमान परमात्मा के सर्वव्यापी प्रेम के विषय में। उन्होंने ही सारा सृजन किया है पूरा वातावरण बनाया है। प्रेम की पूर्ण भावना दी है। परन्तु यह उन्हीं लोगों के लिए है जो बच्चों की तरह से अबोध हैं। यदि आप घृणा में परिपक्व हैं तो कोई आपकी रक्षा नहीं कर सकता। अपनी घृणा को न्यायोचित ठहराने के लिए आपके पास अनगिनत तर्क मिल जाएंगे। जिस सीमा

तक चाहें इस घृणा को तर्कसंगत ठहराते रहें। हमारा देश जो कि अत्यन्त परिपक्व एवं शान्तिप्रिय देश माना जाता है यहाँ भी ऐसे लोग हुए हैं जिनका मार-धाड़ और हत्या में ही विश्वास था। इसे मार दो, उसे मार दो। अतः इन चीजों में विश्वास न करने वाले इस देश में भी लोग बहुत पुराने समय से भिन्न प्रकार की हिंसा करते चले आ रहे हैं। परन्तु मूलतः हम शान्तिप्रिय लोग हैं क्योंकि शान्ति के बिना

उत्क्रान्ति हो ही नहीं सकती। पूर्ण शान्ति का होना आवश्यक है। आपके हृदय में यदि शान्ति है, आपके चहूँ ओर यदि शान्ति है, केवल तभी आप सुन्दर राष्ट्र के रूप में उन्नत हो सकते हैं, किसी भय या दबाव के कारण नहीं। परन्तु आपके हृदय में यदि पूर्ण शान्ति है तभी न केवल आप भयमुक्त होते हैं परन्तु आपके अन्दर से शान्ति भी प्रसारित होती है। ऐसा व्यक्ति शान्ति प्रसारित करता है। उसके पास जाने वाले हर व्यक्ति को शान्ति प्राप्त होती है और उसमें शान्ति की भावना आ जाती है।

आप सभी सहजयोगी हैं आपको आत्म साक्षात्कार मिल चुका है अर्थात् आपकी आत्मा प्रेम एवं चैतन्य लहरियों का प्रसार करने लगी है। आप जहाँ भी होंगे शान्तिमय चैतन्य लहरियों का प्रसार करेंगे। शान्ति का आप सृजन करेंगे। शान्ति का सृजन करने की विधियाँ खोज निकालेंगे कि वातावरण में शान्ति किस प्रकार स्थापित करनी है। हमारा इस प्रकार से उन्नत होना महत्वपूर्ण है कि हम शान्ति का सृजन करें, अन्य लोगों को शान्ति प्रदान करें और इसका उदाहरण बन जाएं।

मुझे विश्वास नहीं होता कि दिल्ली में भी इतनी अधिक संख्या में लोग साक्षात्कारी हो सकते हैं। मैंने कभी इसकी आशा न की थी। आरम्भ में तो मुझे तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ी जब तक लोगों में मेरे कार्य को समझने का विवेक न आ गया क्योंकि देश

का बैटवारा हुआ था जिसमें बहुत से लोगों को जान और माल गँवाने पड़े थे। ये सब मैंने स्वयं देखा है! ऐसी स्थिति में लोग किसी को क्षमा कर पाने में असमर्थ थे।

अतः क्षमा अन्य लोगों के दुःख और तकलीफों को समझने का बहुत अच्छा मार्ग है परन्तु ये गुण आपको अपने अन्दर विकसित करना होगा। क्रोधित और प्रतिशोध की भावना से परिपूर्ण की अपेक्षा आप यदि अपने अन्दर वो शान्ति विकसित कर लें, परमेश्वरी प्रेम के माध्यम से यदि आप वो मानसिक शान्ति प्राप्त कर लें तो आपको कुछ और करने की आवश्यकता नहीं होगी। यही शान्ति आपके हृदय में है इसे महसूस करें। आप शान्त व्यक्ति हैं जल्दी से उत्तेजित होने वाले व्यक्ति नहीं। अपने क्रोध के लिए या लोगों का मिजाज बिगाड़ने के लिए आप कोई सफाई नहीं देंगे, आप ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे। आप इस क्रोध और मूर्खतापूर्ण प्रतिशोध से ऊपर उठ सकते हैं।

जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं उन्हें समझा पाना कठिन है क्योंकि उनसे यदि मैं बात करूँगी तो उन्हें अच्छा न लगेगा। वो यदि आत्मसाक्षात्कार ले लें केवल तभी हम उनसे बातचीत कर सकते हैं।

अतः सर्वोत्तम कार्य यह है कि सहजयोग को फैलाएं। इसे सर्वत्र, सिखों में, मुसलमानों में और इसाईयों में तथा विशेष रूप से हिन्दुओं में फैलाएं क्योंकि आज कल मुझे लगता है हिन्दू लोगों ने भी अपने देश तथा इसकी संस्कृति की समझ पर पकड़ खो

दी है। यही कारण है कि वो प्रतिशोध लेते हैं। इस प्रकार का प्रतिशोध मेरी समझ में नहीं आता। परन्तु क्या किया जाए? लोग उस स्तर तक पहुँच गए हैं, उस अधम स्तर पर, जहाँ वे बहुत सी चीजें नहीं समझ पाते।

उदाहरण के रूप में लोग नहीं चाहते कि एक स्थान विशेष पर श्री राम का मन्दिर बने। इसका कारण उनका सहजयोगी न होना है। मैं उन्हें बता सकती हूँ कि यह वही स्थान है जहाँ श्री राम का जन्म हुआ। हमें उनके अवतरण को पूर्ण सम्मान देना चाहिए। यदि वही उनका जन्म-स्थल है तो हम इस तथ्य को चैतन्य-लहरियों पर महसूस कर सकते हैं। तो क्यों इस वास्तविकता, इस सच्चाई को नकारें? केवल इसलिए की आप इस कार्य को नहीं चाहते। उन लोगों से बात-चीत करना बहुत कठिन है।

हमारे लिए समझने की बात ये है कि बाबर ने हमारे लिए क्या किया? बाबर कौन था? बाबर एक विदेशी था जिसने इस स्थान को बनाया तक नहीं। नहीं, उसने नहीं बनाया। ये तो उसकी सेना के किसी अधिकारी ने किया था और इसीलिए इसे बाबरी मस्जिद कहा जाता है।

परन्तु आइए देखते हैं कि इन श्रीमान बाबर के साथ क्या हुआ? उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु आए वो विदेश से ही थे। वो तो भारतीय भी नहीं थे। तो भी कोई बात नहीं। परन्तु उस स्थान से उनका क्या

लेना-देना? निश्चित रूप से मैं इस बात को जान सकती हूँ और आप सब जान सकते हैं कि बाबरी मस्जिद ही वह स्थान था जहाँ श्री राम का जन्म हुआ।

वहाँ यदि मन्दिर बन जाए तो लोगों को क्या परेशानी हो सकती है। वहाँ मन्दिर बनने से किसी को क्या कष्ट हो सकता है? कहने से मेरा अभिप्राय है कि यह तो केवल सम्मान और भावनाओं का प्रश्न है। मैं श्री राम का नाम लेती हूँ, सभी लोग उनका नाम लेते हैं क्योंकि इससे अत्यन्त सुख और शान्ति मिलती है। परन्तु जिस प्रकार से लोग इस चीज को देखते हैं यह अत्यन्त कठिन कार्य है। आप उनसे बात नहीं कर सकते।

अब वे एक अन्य मूर्खता की बात कर रहे हैं कि कश्मीर में मोहम्मद साहब का एक बाल है। अब किसी ने कह दिया है कि यह बाल उनका नहीं है। आप कैसे जानते हैं? ये निर्णय करने का आपका क्या मापदण्ड है कि ये बाल किसका है? आप हैरान होंगे कि मैं जब कश्मीर गई थी तो हम कार से कहीं जा रहे थे। अचानक मुझे बहुत तेज चैतन्य लहरियाँ महसूस हुईं, तब मैंने चालक से पूछा, "तुम कार को इस ओर क्यों नहीं ले चलते?" वह कहने लगा, क्यों? "क्योंकि मैं जाना चाहती हूँ।" वह कहने लगा, "ये एक पुरानी सड़क है और बहुत थोड़े से लोग यहाँ पर रहते हैं" "कोई बात नहीं। आप गाड़ी ले चलो।" वह उस स्थान के समीप पहुँचता गया।

वहाँ पर मुसलमानों के कुछ घर थे हमने उन्हें बुलाया और उनसे पूछा, "यहाँ क्या हो रहा है?" उन्होंने उत्तर दिया, "यह हज़रत बल है।" नाम से ही इतनी शान्ति प्राप्त होती है। यह मोहम्मद साहब का एक बाल था।

अब हिन्दू मोहम्मद साहब के विषय में नहीं जानना चाहते और मुसलमान श्री राम के विषय में। यह आश्चर्य की बात है! सबने अपनी दुकानें खोली हुई हैं और अपनी-अपनी चीज़ें बेच रहे हैं उन्हें इस बात की समझ नहीं है कि जो वो बेच रहे हैं अन्य लोग भी वही बेच रहे हैं। उदाहरण के तौर पर वो अल्लाह का नाम लेते हैं। अल्लाह कौन हैं? सहजयोग के अनुसार अल्लाह श्री विष्णु के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं और श्री विष्णु ही श्री राम के रूप में अवतरित हुए। अतः जिस अल्लाह की वे बात करते हैं वे स्वयं श्री राम हैं। इस बात को केवल एक सहजयोगी ही समझ सकता है। मैं जब इसके विषय में बात कर रही हूँ आप यदि अपने हाथ फैलाएँ तो ये जानकर आप हैरान होंगे कि कितनी अच्छी चैतन्य-लहरियाँ बह रही हैं क्योंकि श्री राम ही अल्लाह हैं। अपनी मूर्खता के कारण आप उन्हीं का अपमान करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

अतः यह मोहम्मद साहब के शिष्यों की मूर्खता है या हिन्दुओं की। हिन्दू भी इस बात को नहीं समझ रहे हैं। किसी तरह से उन्हें यह ज्ञान है कि यह श्री राम का जन्म

स्थान है। किसी तरह से। मैं नहीं जानती, हो सकता है किसी ने उन्हें बताया हो, मैं नहीं जानती उन्हें किस प्रकार पता चला परन्तु चैतन्य लहरियों का ज्ञान तो उन्हें नहीं है। अभी तक मुझे ऐसे बहुत से हिन्दू नहीं मिले हैं जिनमें चैतन्य-लहरियाँ हों-मेरा कहने का अभिप्राय इन धर्मान्ध लोगों से है। उन्हें कभी चैतन्य लहरियाँ नहीं आती। मैं हैरान होती थी कि किस प्रकार उन्हें पता चला कि यह श्री राम की जन्मभूमि है। हो सकता है किसी तरह से उन्हें इसका पता चल गया हो। परन्तु इससे वे कुछ प्रमाणित नहीं कर सकते। यदि वो आत्मसाक्षात्कारी होते, यदि हमारे उच्च न्यायालय के न्यायाधीश साक्षात्कारी होते, यदि हमारा मंत्रीमण्डल साक्षात्कारी होता तो उनसे बात की जा सकती थी। परन्तु वे सब, मैं क्या कहूँ, पूरी तरह से बाधित लोग हैं। किस प्रकार उन्हें बताया जाए कि ये झगड़ा सिर्फ मूर्खता है! वहाँ श्री राम का मन्दिर बनाया जाना बिल्कुल ठीक है। आप जो चाहे कहते रहें। समस्या ये है कि सर्वप्रथम उन सबको आत्म-साक्षात्कार लेना होगा।

अभी, जब हम ये बात कर रहे हैं, आप देखें कि आत्मसाक्षात्कारी लोग पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं। आप सब आत्मसाक्षात्कारी हैं। अभी कोई मुझसे बता रहा था कि वह व्यक्ति जो महन्तों को आत्मसाक्षात्कार दे रहा था, महन्त वो लोग होते हैं जिन्हें सन्त समझा जाता है, कि जब उन महन्तों को

आत्म साक्षात्कार मिल गया तो उनका पर्दाफाश हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उनका क्या करे? कहीं भी ऐसा घटित हो सकता है चाहे वो इसाई चर्च हो या यहूदी हों। सर्वत्र आपको ये समस्या मिलेगी। आप यदि उन्हें आत्मसाक्षात्कार देंगे तो उनका पर्दाफाश हो जाएगा। अतः उन लोगों को परेशान करने का क्या लाभ है जिनकी श्रद्धा इन महन्तों में है और जो इन्हें बहुत महान समझते हैं। इन लोगों को केवल चैतन्य लहरियों के माध्यम से ही समझा जा सकता है। परन्तु प्रेम के वशीभूत होकर मैं उन्हें बता नहीं सकती कि आप लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं। श्री राम या मोहम्मद साहब के विषय में बातें करना आपका काम नहीं है। वे आपसे बहुत परे हैं।

अब समस्या अज्ञानियों तथा ज्ञानवान लोगों में है। पहले इनकी दूरी बहुत अधिक थी। कोई एक व्यक्ति आत्मसाक्षात्कारी हुआ करता था, तो लोग उसे पत्थर मारा करते थे, पीटते थे तथा सभी प्रकार से सताते थे। अब आप लोग बहुत बड़ी संख्या में हैं। इस अवस्था में भी आप यदि कोई प्रदर्शन करें तो कोई आपको नहीं सुनेगा। मैं आपसे एक ही प्रार्थना करूंगी। अधिक से अधिक लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें—इन तथाकथित आध्यात्मिक लोगों को नहीं, सर्वसाधारण लोगों को—क्योंकि इन तथाकथित आध्यात्मिक लोगों का तो पर्दाफाश हो जाता है, इन्हें साक्षात्कार देने का क्या लाभ है?

यह आम बात है। बहुत से लोगों ने मुझे बताया, “हमने एक पादरी को आत्मसाक्षात्कार दिया, उसका पर्दाफाश हो गया।” “अर्थात् क्या हुआ?” “श्रीमाताजी, उसकी पोल खुल गई। उसे कैद में डाल दिया गया।” “अरे! यह तो ज्यादाती है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् वह जेल चला गया!”

अतः यह समस्या है। प्रेम में आप पाखण्डी नहीं हो सकते। प्रेम में तो आपको पावन व्यक्तित्व होना होगा। स्वयं को पवित्र करने के लिए संघर्ष करें। आपको परिवर्तित होना है। अब भी यदि आपको क्रोध आता है, अब भी यदि आप में लालच है, अब भी यदि आप में ये दोष बने हुए हैं तो प्रेम कार्यान्वित नहीं होगा। यह कार्य न करेगा।

किसी को भी दिव्य प्रेम करने से पूर्व हमें पावनता का मूल्य समझना होगा। क्यों मैं बच्चों से प्रेम करती हूँ? क्योंकि वे अबोध (निश्छल) हैं। उनमें ये सब दोष नहीं है। जैसे हमारे देश में भ्रष्टाचार महामारी की तरह से फैलने लगा है — महामारी की तरह से। यह साधारण बात नहीं है। किसी को भी आप देखें, हर तीसरे व्यक्ति को भ्रष्टाचार का रोग लगा हुआ है! क्यों? क्योंकि सभी धन-लोलुप हैं। ठीक है। परन्तु उस पैसे से वो करते क्या हैं? उनकी समझ में नहीं आता कि इसे किस तरह से छुपाएं। इस धन को वे किसी मटके आदि में डाल देते हैं और अन्ततः यह सारा धन खो जाता है। ऐसा यदि न भी हुआ तो वे

पकड़े जाते हैं। यह सब बातें महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यह लालच होना ही क्यों चाहिए? धनवान लोग निर्धन लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक लालची हैं क्योंकि निर्धनों को परमात्मा का कुछ तो डर है! धनवान अत्यंत लोभी हैं। वे सदैव किसी न किसी चीज के पीछे दौड़ते रहते हैं। इस दौड़ का कोई अन्त नहीं है। आश्चर्य की बात है कि हमारे इस देश में भी यह रोग लग गया है! इसी रोग के कारण, कुछ लोग सहजयोग को व्यापार बना रहे हैं और सहजयोग से धन एकत्र कर रहे हैं।

यह लालच आपके विकृत दायें पक्ष (Right Side) की देन है और आप इसे न्यायोचित ठहराने लगते हैं। दायीं और की विकृतियों में प्रेम का कोई स्थान नहीं है।

अब ये लालच इस सीमा तक बढ़ गया है कि पूरा देश इससे नष्ट हो रहा है। इस प्रकार हम कभी उन्नत नहीं हो सकते। इस दोष के रहते हम कोई भी उपलब्धि नहीं पा सकते। आप यदि अपने देश को प्रेम करते हैं, देश प्रेम यदि आपके हृदय में है तो कभी भी आप लालच नहीं करेंगे। परन्तु उस प्रेम का अभाव है। वे प्रेम करते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि वो किसे प्रेम करते हैं! अपने बच्चों से वे इस प्रकार प्रेम करते हैं कि उस प्रेम से बच्चों का जीवन ही नष्ट कर देते हैं!

प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। प्रेम तो असीम होना चाहिए। इतना असीम प्रेम कि

पूरे विश्व को अपने पाश में बांध ले। यह शक्ति है, यह कार्यरत है। आपको तो केवल इसका माध्यम बनना होगा, ऐसे व्यक्ति जो इस प्रेम का संचार कर सकें। प्रेम के इस खजाने पर आपका पूर्ण अधिकार है। इसे आप सर्वत्र फैला सकते हैं। परन्तु मैं देखती हूँ कि यहाँ भी लोग धन की भाषा में सोचते हैं। धन प्रेम का दुश्मन है। मैं आपको विश्वास पूर्वक बताती हूँ कि यदि अब भी आपका रुझान धन की ओर है तो आप कभी सहजयोग में उन्नति नहीं कर सकते।

मैं मानती हूँ कि मैं निराश हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार चीजों में रुचि लूं। इसमें रुचि लेने वाला क्या है? लोग मुझ पर हँसते हैं कि "आप को सीधी-सीधी सी चीजों का भी ज्ञान नहीं है, आप रुपये गिनना भी नहीं जानती? मैंने कहा, "मैं जानती हूँ।" मैं आपको वैसे ही बता सकती हूँ कि कितना पैसा है, पर इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है। दिलचस्पी लेने के लिए बहुत सी अन्य चीजें हैं। आप बच्चों को देखें, अच्छे-अच्छे लोगों को देखें। विश्व में बहुत से अच्छे लोग हैं, सुन्दर लोग हैं, सुन्दर चीजें हैं। बेकार की चीजों पर क्यों चित्त बर्बाद करना है? ये तो आती जाती रहती हैं। परन्तु आकर्षकतम चीज भी तो यहाँ विद्यमान है।

मेरे विचार से भारत में स्थिति सबसे खराब है। लोग कहते हैं भारत सबसे भ्रष्ट देश है, परन्तु मैं नहीं जानती। मैंने कभी

ऐसा कुछ नहीं देखा। व्यक्ति को सच्चा होना चाहिए। आज जैसे अवसर पर यह सोचना अत्यन्त शुभकर है कि आपके लिए धन का कोई मूल्य नहीं है। यह मूल्यहीन है। और आपको आश्चर्य होगा कि आपको धन की कभी कमी न होगी। कभी नहीं। सहजयोग में आपने यह स्थिति प्राप्त करनी है कि धन का कोई मूल्य नहीं। धन में कोई रुचि नहीं। आपका वैभव तो इस बात में है कि आप कितने लोगों को सहजयोग में लाए, कितने लोगों को सहजयोग का आनन्द प्रदान किया। आपने इसे खरीदा नहीं था। किसी ने भी सहजयोग को खरीदना नहीं है। यह तो सर्वत्र निःशुल्क प्रसारित है। ये आनन्ददायी है। धन से इसके अतिरिक्त आप क्या पाने की आशा करते हैं? कुछ नहीं। धन से तो केवल सिर दर्द, भय और सभी प्रकार की समस्याएं आती हैं।

अतः हमारे सहजयोग के समानान्तर स्वतन्त्र जीवन, पूर्ण स्वतन्त्रता एवं आनन्द होना चाहिए। किसी चीज़ की चिन्ता न हो। धन पर कुछ भी निर्भर नहीं। मैंने अत्यन्त निर्धन अवस्था में रहने वाले लोगों को भी अत्यन्त प्रसन्न एवं आनन्दित देखा है। और जिन लोगों के पास बेशुमार दौलत है, विशेषतः विदेशों में, उन्हें उदासी और खिन्नता से पीड़ित पाया है। वहाँ बड़ी अजीब स्थिति है। वहाँ लोग आत्महत्या कर लेते हैं। क्यों? यदि धन ही सब कुछ होता तो इन वैभवशाली देशों के लोग

आत्महत्या क्यों करते? उनका क्या लाभ है? देखें, हर समय वे क्या सोचते हैं—किस प्रकार यह फैशन किया जाए? फैशन, क्योंकि आपके पास यदि धन नहीं है तो आप वो फैशन नहीं कर सकते। आजकल फैशन इतनी आम बात हो गए हैं कि सभी लोग फैशन के पीछे भटक रहे हैं। फैशन तक यदि वे नहीं पहुँच पाते तो वो सोचते हैं कि उनमें कोई कमी है। परन्तु आप लोगों पर यह बात लागू नहीं होती क्योंकि आप सहजयोगी हैं।

आप यह सब घटित होते देखते हैं, अब आपने क्या करना है? ऐसे लोगों पर दया करें। उनका तिरस्कार न करें, उन पर दया करें। उन्हें बतायें कि “तुम क्या कर रहे हो? क्यों अपना समय बर्बाद कर रहे हो? आत्मसाक्षात्कार रूपी जीवन के महानतम लक्ष्य को पाने का, आपके लिए यह सर्वोत्तम समय है। क्यों आप व्यर्थ की चीज़ों के पीछे दौड़ रहे हैं? यह चूहा दौड़ दौड़ने के लिए आपको कौन विवश करता है?”

मेरे विचार से सर्वत्र यह पराकाष्ठा है और लोग इसके विषय में सोच रहे हैं। परन्तु आप ही वह लोग हैं जो समाधान दे सकते हैं। आप इसे बहुत ही विस्तृत स्तर पर कार्यान्वित कर सकते हैं।

कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिनके पास कुछ नहीं। वे आध्यात्मिक भी नहीं हैं। वे आत्मसाक्षात्कार भी नहीं दे सकते, कुछ भी नहीं दे सकते।

परन्तु क्योंकि वे सामाजिक कार्य कर रहे हैं, इसलिए वे प्रसिद्ध हैं। सामाजिक कार्य क्या है? गरीबों आदि की देखभाल करना या ऐसा ही कोई और कार्य। जब आपका प्रेम, जो कि इतना महान है, प्रभावशाली है, कार्य करने लगता है तो आप में यह भाव आता है कि आप कुछ करें। ऐसी स्थिति जब आएगी तो, आप हैरान होंगे, किस प्रकार लोग सहजयोग को समझते हैं!

अभी तक सहजयोग ठीक है, लोग बहुत अच्छे हैं, बढ़िया हैं, सन्त-सुलभ हैं, सभी कुछ है। परन्तु इसका प्रभाव दिखाई पड़ना चाहिए, आपके प्रेम का प्रभाव लोगों को दिखाई देना चाहिए। सर्वप्रथम 'क्षमा' है। आपको क्षमा करना है। लोग अत्यन्त मूर्ख हैं। अभी मैंने आपको बताया है कि लोग कितने मूर्ख हैं! अतः किसी चीज़ की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। आप यदि विवेकशील व्यक्ति हैं तो विवेक पूर्वक हर चीज़ को परखें तथा फैशन आदि के शिकंजे में न फंसे। समूह बिल्कुल न बनाएं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हम सहजयोगी हैं। हम आत्म-निर्भर हैं। हमें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं। आप यदि एक हैं तो हम सब ठीक हैं। आप यदि बहुत से हैं तो भी हम ठीक हैं।

अब आप लोग जान लें कि आपने एक अत्यन्त उच्चावस्था पा ली है। आपने परमात्मा के उस प्रेम को, उस अनन्त प्रेम को छू लिया है।

अतः अपनी दिन-चर्या में उस प्रेम की

और अधिक अभिव्यक्ति करें, अन्य लोगों से कार-व्यवहार करते हुए उस प्रेम की अभिव्यक्ति करें। इस प्रकार से अपना प्रेम अभिव्यक्त करें कि अन्य लोगों को इससे खुशी मिले। इसके विषय में विचार किया जाना चाहिए। आप यदि सच्चे सहजयोगी हैं तो किस प्रकार परस्पर झगड़ सकते हैं? यदि वो सहजयोगी हैं तो किस प्रकार आप उनका अपमान कर सकते हैं? आप यदि सहजयोगी हैं तो कैसे आप धोखा दे सकते हैं? यह सम्भव नहीं है। इन चीज़ों में आपकी रुचि नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने का अर्थ ये होगा कि आपका समाधान हो गया है, आप स्वच्छ हो गए हैं और अब आप निर्मल हैं। कोई आपको छू नहीं सकता।

इस प्रकार का दृष्टिकोण होना चाहिए। अपने प्रति आपमें सम्मान भाव होना चाहिए। आपकी भूमिका क्या है? आपका पद क्या है? आप को ज्ञान होना चाहिए कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं और आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के रूप में अपने कर्तव्यों का ज्ञान आपको होना चाहिए। अन्य पागलों की तरह आप चूहा-दौड़ नहीं दौड़ रहे और न ही किसी प्रकार की प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। आप प्रतिस्पर्धा में भाग नहीं ले रहे। आप तो बस अपने प्रेम तथा आशीर्वाद से उन्नत हो रहे हैं। मैं जानती हूँ कि किस प्रकार आशीर्वाद कार्य करता है। परन्तु सर्वप्रथम आपको इस आशीर्वाद के योग्य बनना होगा अन्यथा कोई सहायता नहीं कर सकता। केवल आपका प्रेममय स्वभाव

सहायक हो सकता है। इसी लिए ईसा मसीह ने कहा था कि परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए आपको बाल-सुलभ होना पड़ेगा। बच्चे कितने अबोध, कितने सहज होते हैं! छोटी-छोटी चीजों से वो रीझ जाते हैं। उन्हें किसी विशेष चीज की आवश्यकता नहीं होती। कितनी आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार हमारा प्रेम, जो कि दिव्य-प्रेम से ज्योतिष है, पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकता है! किस प्रकार मुझे यह विचार आया और किस प्रकार ये समृद्ध हुआ? इस कार्य में यदि आप सब मेरी

सहायता करें तो, मुझे पूर्ण विश्वास है, सहजयोग बहुत से ऐसे कार्य कर सकता है जो हम अभी तक नहीं कर पाये।

अब घर पहुँच कर आप सोचें कि मैंने क्या कहा है। इसके विषय में सोचें। आपको अन्तर्बलोकन की आवश्यकता है, सूझ-बूझ की आवश्यकता है। "सहजयोगी के रूप में मैंने अपने जीवन में क्या किया?" तब आप जान पाएंगे कि आप बहुत कुछ कर सकते हैं—बहुत कुछ। यही सब कार्य होते हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

I'm telling them about love, all-pervading love of God Almighty. He's created this whole thing. The whole atmosphere is there. The whole feeling is there of love. But it's possible only for people who are innocent, like children. If you are very mature in your hatred, no one can save you. You'll have ten arguments to show that your hatred is justifiable. Then you'll go to any extent to justify it. We had people in our country, which is a very, supposed to be a very, sober country, a very peaceful country, we had people who just believe in killing — kill this, kill that.

So even in this country, which didn't believe in all these things, indulged into all kinds of violence since long. But basically we are people who believe in peace, because without peace no growth can take place. There has to be complete peace. If there is peace in your heart, if there is peace surrounding you, you grow into a beautiful nation. Not out of fear, not out of pressure, but from inside; if you are a person who has complete peace within the heart, not that he is not afraid of anything, but he emits peace. He gives peace. Anybody who goes near such a person, gets the peace, the feeling of peacefulness.

You all are Sahaja Yogis. You all have got your Realization. That is, your spirit is now emitting vibrations of peace and joy. Wherever you are, you will emit peaceful vibrations. You will create peace. You'll find out ways of creating peace, how to establish peaceful atmosphere. It's very important that we have to grow in such a manner that we create peace and give peace to others and become examples of it.

I cannot believe in this Delhi I could have so many people who are realised souls. I never expected. First of all, I had to wait until people got into a proper mind to understand My work, because we had partition and so many people lost their lives, lost their properties and I have faced all that. I have seen it Myself and they just couldn't; couldn't forgive other people.

So forgiveness is a very good method of understanding the pain of others; troubles of others, but this depth you have to develop. Instead of getting angry, getting revengeful, if you can develop that peace within yourself, if you can manage to have the peace of your mind through Divine love, there's no need for you to do anything extra. It's just the peace that you have, now, in your heart. Just feel it. You are a peaceful person. You are not a person who is easily disturbed. You will never give explanations for getting angry, for spoiling the mood of people. You will not do that. You are the ones who rise above all this anger and this stupid revengefulness.

It is difficult to explain to those people who are not Realized Souls, because if I talk to them, they won't like it. If they get their realisation, we can talk to them.

So best thing you should spread Sahaja Yoga. Spread it among Sikhs, among Muslims, among Christians, throughout, and especially among Hindus because nowadays I find Hindus are also, have lost their grip over their understanding of our country and its culture and that's how they just revenge, they take revenge. I don't understand this kind of revenge but what to do? People are already on that level, on that low level, where they don't understand many things.

For example now, they do not want people to build a temple of Shri Rama at a particular point. Because they are not Sahaja Yogis, I can't talk to them that that is the place where He was born. So we must pay full respect to His incarnation. If that is the place He was born, we can feel it with the vibrations, then why deny the fact and the truth just because you don't want it to be done? It's very difficult to talk to them.

What to understand is that, what has Babar done for us? Who was Babar? He was a foreigner and

this one was not even built by Babar. No, it was not. It was somebody who was his — one of the military man who went and built it and that's why they call it a Babri Masjid.

But let us find out what happened to this Mr. Babar. He died, but he came from abroad. He was not even an Indian. And doesn't matter, he was not born there. I mean, he had nothing to do with that place, but definitely I know and you all will know, can feel it all on your hands just now that it is Babri Masjid, is the place where Shri Rama was born.

Now, if you want to build a temple there, what will go wrong with people? What will happen to them if a temple is built there? I mean it is just a question of respect and feelings about it. I also take Rama's name; everybody takes His name because such a solace and such a comfort. But the way people look at things, it's difficult, you can't talk to them.

Now they are talking about another nonsense that we have one hair of Mohammed-sahib in Kashmir. Now somebody said that it is not His hair. How do you know? What is your criterion to decide whose hair it is? Actually, you will be amazed, when I went to Kashmir; we were going somewhere in the car and suddenly I felt tremendous vibrations. So I asked the driver, "Why don't you take the car on this side?"

He said, "Why?"

"Because I want to go."

He said, "It is an old road and there are some few people living there."

"It doesn't matter. Take it."

We went near and nearer and there were some houses of Muslims, so we called them and asked them, "What is here going on?" They said, "It is Hazrat Bal." Even the name gives you such peace. It was the hair of Muhammed-sahib. Now Hindus don't want to know about Him and Muslims don't want to know about Shri Ram. It's very surprising. They are all having their own shops and selling their own things, but they don't understand that whatever they are selling is the same which the other people are selling. For example, they say, "Allah." Who is Allah? According to Sahaj Yoga, Allah is nobody else but Vishnu and Vishnu who came also as Shri Ram. So whatever they call as Allah is Shri Ram Himself. Only a Sahaj Yogi can understand that. If you put up your hands now when I am talking, you will be surprised what vibrations are there because it is Shri Ram, who is Allah, whom you are trying to insult by your stupidity.

So it could be stupidity on part of Muhammed-sahib or on part of Hindus. Hindus are also not understanding. Somehow they know that is the birthplace of Shri Ram. Somehow, I don't know, somebody must have told them. Or maybe — I don't know how they know — they don't know vibrations. I haven't yet met many Hindus who have vibration — I mean those who are what you can call fundamentalist. They never have vibrations. So I used to wonder, how do they know this is the janma bhoomi of Shri Rama? Maybe, somehow they come to know. But they have no point to prove. The problem is if they were Realized Souls, if our high court judges were Realized Souls, if our cabinet were Realized Souls, you could have talked to them. But they are all — what should I say? — Absolutely blocked people. How to tell them that this quarrel is a nonsense? It is perfectly all right to build a temple of Shri Ram. But whatever you may say, the trouble is first they all should get their Self Realization.

Just now, at the time when we are talking, see, there are not sufficient people who have got Self Realization. You are all Realized Souls. There was another one who told Me, who was giving Realization to these mahantas — mahantas are the people who are suppose to be saints — and every one of them, when they got Realization, they got exposed, so he didn't know what to do with them. That may happen with anyone, even in Christian churches or you go to Jews — everywhere you'll find this is the problem. If you give them Realization, they'll get exposed. So what's the use of disturbing all the people who have such faith in them and think they're very great people.

Now only way you can judge them is through vibrations. But out of love, I can't tell them that "You are not Realized Souls. You have no business to talk about Shri Ram or about Mohammed-sahib. They're much beyond you."

So the problem now is between the people who are not knowledgeable and those who are knowledgeable. It was a very big gap before. Only one person used to be a Realized Soul; so they used to stone him, beat him, do all kinds of things. Now you are so many. So, if you put up your case anywhere, even at this stage, nobody is going to listen to you.

I would request you only one thing. Give Realization to people, as many as possible, and not to any 'spiritual' so-called people. Because they get exposed, what's the use?

This is a common thing. So many people have told Me, "We gave Realization to one priest. He got exposed."

"Means, what happened?"

"He was exposed, Mother. He was put in jail."

"Aiy, this is too much. After getting Realisation, he goes to jail."

So this is the problem. In love, you cannot be hypocritical about it. Love — you have to be a pure personality. Must try to purify yourself. You have to change. If you are still angry, if you are still greedy, if you have all these things, love won't work out. It won't work out.

So to love someone in a Divine way is to first understand the value of innocence. Why I love children? Because they're innocent. They don't have all these things. Like in our country these days, the epidemic — epidemic of corruption has started — epidemic. It's not simple. Anybody you see, after every third person, there's an epidemic of corruption. Now why? Because they want money. All right. Then what do they do with their money? They don't know how to hide, so they put it in some sort of a pot or whatever it is and the money gets lost. If not, they are caught up. That's not so important. What's important is, 'Why have this greed?' People who are rich are more greedy than the people who are poor, because the poor people at least have some fear of God. But the rich are very greedy. They're running after this, running after that. There's no end to it. It is very surprising that in this country of ours this new disease has started. With this disease, even in Sahaja Yoga, there are some people who have made a business out of Sahaj Yoga and making money. So greed is something that comes to you from the right side and you start justifying it. There's no place for love for the right side.

Now this greed has gone so far that the whole country is getting ruined. We can never progress. We can never achieve anything because everywhere there's greed when people are just taking it. But if you love your country, if you have love for your country, you won't do it. But that love is missing. They love — I don't know whom do they love. They love their children in such a way that they ruin their lives.

Love is not limited. Love has to be unlimited. Unlimited love which binds the whole world. There is this force, there is already acting this force; only thing you have to become the agents of that, to become the people who can communicate that love. You have every right to that great wealth of love and you can spread that all around. But I find that even here people think in the terms of money. Money is the enemy of love. I assure you if you have interest in money, you can never progress in Sahaja Yoga.

I'm hopeless, I agree. I don't know how to take interest even. What is so interesting about it? And people laugh at Me that "You don't know simple things, even to count the money." I said, "I know." I can tell you like this, how much money's there, but I'm not interested. There's so many other things to be interested. You see the children. You see nice, nice people. In the whole world, there are so many beautiful people, beautiful things. Why pay so much attention to this useless stuff, which comes and goes? But that is what is the most — I should say — gripping thing that is also there.

In India is the worst, I think. They say that India is the most corrupt country, but I don't know. I

have never seen that kind of thing, but must be true. On such an occasion, it's very auspicious that you should think that money is of no value to you, has no value, and you will be amazed, you will have never dirth of money — absolutely. This is one thing in Sahaja Yoga you have to get, that money is of no value. There's no interest in money. Your money is in getting how many people you have in Sahaja Yoga, how many people you have brought in Sahaja Yoga, how many people have got this joy. You have not purchased it. Nobody has to purchase it. It's free, flowing everywhere. It's so joy giving. What else do you want with money? Nothing. Just with money — headaches, fear and all kinds of problems.

So, parallel to our Sahaja Yoga, it should be the life of freedom, complete freedom and enjoyment, nothing to worry about. Nothing is dependent on money. I have seen people living in very poor conditions, extremely happy and joyous; while those who have lots of money, especially in the foreign countries, are rich people. They have depression, all kinds of funny, funny situations there. They commit suicides. Why? If money was everything, why all the rich country people commit suicide? What is the gain they have? See, and all the time what they are thinking, how to get into a kind of a fashion. Fashion, because if you have no money, you cannot get into those fashions. The fashions are so common now, so common, that for that people hanker. If they cannot get to the fashions, they think that something has gone wrong with them, something is — But not you because you are Sahaja Yogis.

Now you see these things happening, so what have you to do? Have pity for such people — no contempt, but pity — and you have to tell them that, “What are you doing? Why are you wasting your time? This is the best time for you to reach the highest goal of your life, of Self Realization and why are you so much running after all these things? What is it that makes you run this rat-race?”

I think it's a breaking point everywhere and people are thinking, but you are the people who should provide. In a very large scale, you can work it out.

I mean, I have seen people who have nothing in them. They are not spiritual. They are not the ones who can give Realization or anything. But just because they are doing some social work, they are very famous. What is the social work? Looking after the poor or something like that.

Now, when your love, which is so great, which is so effective, that starts working, you feel you should do something, then you'll be amazed how your Sahaja Yoga will be understood.

So far Sahaja Yoga is all right, people are very nice, excellent, saintly and all. But effect of that must be seen and people should see the effect of that, of your love. First is forgiveness. You have to forgive people. They are utterly stupid. I have just now explained to you how stupid they are. So, nothing to worry about that. If you are such a wise personality, you should try to judge everything with wisdom and don't fall a trap into things where you feel that you have to do it like some fashion or some sort of a — I should say what? — some grouping. No need, we are Sahaja Yogis. We are self-sufficient. We don't need anything. If you are one, we are all right. If you are many, we are all right.

Now you must know that you have reached a very high state and you have touched that love, that Universal Love of God.

So express more of that love in your daily life. Express more of that love in dealing with others. Express your love in a way that others are made happy. It's all something to be thought of. How can you quarrel if you are real Sahaja Yogis? How can you put down others if they are Sahaja Yogis? How can you deceive others if you are Sahaja Yogis? Not possible. You should have no interest in all these things. That means now you are clarified and you are clear and you are now Nirmal. Nobody can touch you.

This sort of attitude, should have respect for yourself. This kind of understanding you should have about yourself. What is your role? What is your position? You should know that you are Realized Souls and what you should do as Realized Soul that you should know. You are not another sort of

madman running the rat race or also you're not in competition. You're not competitive. You are just progressing by your own love and blessings. I know how the blessings work. But first of all, you have to be worthy of that blessing, otherwise – can't help it. Your loving nature. That's why Christ has said that you have to be like children to enter into the Kingdom of God. You are already in the Kingdom of God, but you have to be like children; how innocent they are, how simple they are and they're happy with small, small things. They don't want something very extraordinary. It's very surprising how our love, which is actually, is enlightened by Divine Love, can change the whole world. How I had this idea and how it has prospered. If you all help Me in this, I'm sure Sahaja Yoga can do so many things, which have not been achieved.

Now you go home and think whatever I have told you. Think about it. What you need is introspection. What you need is understanding. “What have I done out of my life as Sahaja Yogis?” And then you will find out that you can do a lot, a lot. And that has to be done.

May God bless you.

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

I am seeing the magnitude of love. How it has spread all over! To how many people? No one knows. But I have understood its Philosophy. Could there be any Philosophy of love? Love has no Philosophy. Like a huge expanse love spreads all over. We are not aware of it, we do not know it. But the love of God is all p e r v a d i n g , pervades all over the universe. You could experience



There should be no other feeling in your heart but love

it only after getting Self-Realization. Only then you could know that this Love alone is the power of God. Then power of love works out. However, we don't understand it.

It is very mean to hate someone, to be malicious towards others and to

quarrel with them. You are Sahaja Yogis. There should be no other feeling in your heart but love. When we look at the problems of our country, we fail to understand as to why man has created all this turmoil in the name of religion! What was the necessity? Something begins, then it has a reaction which is much more than the action. The sensitivity and experience of God

is reduced by such activities. We have to try to understand as to how to encourage love. How could we express our love and make it flourish.

First of all we should take care of our children. What are we teaching them? If someone slaps our child, do

we tell the child to go and hit him? If we tell our child that it is alright, the one who has slapped you is not wise enough. He will be alright and be friendly with you. The heart of the child is very innocent. He will immediately understand if he is told that slapping is bad, of course, but it will be worse if you also do the same. Child will know that fighting with each other is bad. This quality is to be developed from very childhood. In childhood the children are told that you are Muslims, Hindus, etc.

The poor child cannot understand all these things. He thinks I am like all other people-my features are the same. Then why are they telling me like this? So this Greed and Hatred are our evil tendencies. These tendencies could be destroyed by Sahaja Yoga. The evil tendencies should be eradicated completely. Only then we could know about God and ourselves.

May God Bless You.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi & English Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

सारांश (Excerpt)



वाढदिवस पूजा

प.पू. श्रीमाताजी निर्मलादेवींचे भाषण (सारांश)

निर्मलधाम दिल्ली दिनांक २१ मार्च २००२



“सृष्टीमध्ये सर्वत्र पसरलेल्या परमचैतन्याच्या प्रेमशक्तीचे तुम्ही वाहक बनले पाहिजे.”

इथे पसरलेला हा प्रेमसागर पाहून माझे हृदय भरून आले आहे. या प्रेमप्रवाहाचा एवढा महासागर कसा निर्माण झाला हेहि लक्षांत आले नाही इतकी ही सुंदर घटना आहे. प्रेमाचे शास्त्र असे कांहींच नसते कारण त्याची शक्ति महासागरासारखी सर्वदूर पसरलेली आहे; इतकी की त्याची व्याप्ति लक्षांत येणे अवघड आहे. परमात्म्याची ही प्रेमशक्ति सान्या विश्वामधें, सर्व देशांमधें, सर्वत्र ठायी ठायी पसरलेली आहे. तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार मिळाल्यानंतरच तुम्ही ती जाणू शकता. प्रेम हीच त्या परमात्म्याची शक्ति आहे आणि प्रेमामधूनच ती कार्यान्वित होत असते. सर्वसाधारण लोकांच्या हे लक्षांत येत नाही; दुसऱ्याबद्दल मत्सर वा द्वेषभाव बाळगणें, दुसऱ्याशी भांडण-तंटा करणें या सर्व हीन प्रवृत्ति आहेत. तुम्ही सहजयोगी आहांत म्हणून तुमच्या मनांत सदैव प्रेमभावनाच फुलली पाहिजे.

आपल्या या भारतदेशांत सध्या जी अशांत परिस्थिति दिसत आहे ती बघितल्यावर मनांत प्रथम जाणवते की धर्माच्या नावाखाली लोक एवढे अकांडतांडव कसे करू शकतात? धर्माबद्दल कुणी कांही बोलले वा केले की त्याची तीव्र प्रतिक्रिया दुसरे लोक लगेच व्यक्त करू लागतात; या क्रिया-प्रतिक्रियेला कांही अर्थ नसतो; उलट त्यामुळें लोकांच्या मनांतील परमात्म्याच्या अस्तित्वाची भावना क्षीण होत जाते. म्हणून परमात्म्याची ही प्रेमशक्ति लोकांच्या मनांत कशी दृढ करता येईल याचा तुम्ही विचार केला पाहिजे. मी म्हणने की त्यासाठी आपण लहान मुलांपासून सुरुवात केली पाहिजे. आपण मुलांना काय शिकवतो व शिकवायला पाहिजे इकडे लक्ष द्या. आपल्या मुलाला दुसऱ्याच्या मुलाने मारले तर त्याला जाऊन उलट थप्पड मारायला आपण सांगणार कां? त्याऐवजी त्याला समजावले की-मारलं तर मारलं, जाऊ दे, कांही बिघडत नाही-तर तो मुलगाही राग विसरून जाईल. मुले जात्याच अबोध व सरळ स्वभावाची असतात. दुसऱ्या मुलाला मारणें ही वाईट गोष्ट आहे व मुलांनी ती करू नये असे त्याला समजावले पाहिजे. मारपीट करण्याची ही प्रवृत्ति लहान वयापासूनच घालवली पाहिजे. याच्या उलट लहानपणीच ‘तू हिंदू आहेस, तो मुसलमान आहे’ असे भेदभाव त्याच्या डोक्यांत भरवणें चूक आहे. द्वेष, मत्सर, घृणा, इ. दुष्ट प्रवृत्ति सहजयोगामधून नाहीशा होतात व तसे झाल्यावरच परमात्मा काय आहे व त्याचा आपल्याशी काय संबंध आहे हे तुमच्या लक्षांत येईल.

परमात्म्याची सर्व वातावरण व्यापून राहिलेली ही शक्ति जाणण्यासाठी तुम्ही अबोधितता जोपासली पाहिजे. लहान मुले अबोधित असतात. ज्याच्या स्वभावांत वैरपणाच भिनलेला आहे त्याला कुणीच वाचवू शकणार नाही, त्या दुर्गुणाचे कितीही समर्थन करण्यात अर्थ नाही. शांत व सुस्वभावी समजल्या जाणाऱ्या लोकांच्या आपल्या देशांतही लोकांचा खून करायलाही न कचरणारे कांही जण असतील. पण मुळांत येथील

लोकांना शांतता आवडते; शांति प्रस्थापित झाल्याशिवाय विकास संभवत नाही; समाजाच्या सर्व व्यवहारांमध्ये शांति असेल तरच तो देश नांवारुपाला येतो. भय, धाक, जबरदस्ती वापरून हे होत नाही. शांति ही हृदयांतील एक सुंदर भावना आहे; ज्याच्या हृदयांत शांति असते त्याच्या सहवासातूनही शांतीच पसरते. असा माणूस निर्भय असतो.

तुम्ही सर्वजण सहजयोगी आहांत, तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार प्राप्त झाला आहे; अर्थात तुमच्या आत्म्याकडून चैतन्य पसरत आहे; त्या चैतन्यामधूनच शांति व आनंद पसरणार आहे. कुठेही असलात तरी तुमच्याकडून शांत चैतन्य लहरीच पसरतील; त्यामुळेच सगळीकडे शांततेचे साम्राज्य व वातावरण तयार करण्यासाठी तुम्ही समर्थ आहांत. तुमची वाढ अशीच व्हायला हवी की ज्यामुळे तुम्ही सर्वासमोर आदर्श व्हाल. दिल्लीसारख्या या ठिकाणीही इतके आत्मसाक्षात्कारी लोक होतील असे मलाही कधी वाटले नव्हते. सर्वप्रथम लोक माझी भाषा समजून घेण्याइतक्या मनःस्थितीवर येईपर्यंत मला वाट पहाणे जरूरीचे वाटले. स्वातंत्र्य होण्याच्या काळांत लोकांना भयानक आपत्तींना सामोरे जावे लागले, कित्येकांचे सर्व संसार उध्वस्त झाले, मी हे प्रत्यक्ष बघितले आहे; त्यांना क्षमा या शब्दाला कांही अर्थच उरला नव्हता. खरे तर दुसऱ्याच्या वेदना जाणण्यासाठी क्षमेइतका दुसरा कुठलाच उपाय नाही. क्षमा करण्याची शक्ति आपण जोपासलीच पाहिजे. दुसऱ्यांवर रागवण्याऐवजी, त्यांच्याबद्दल सूडभावना बाळगण्याऐवजी पणमेध्वरी प्रेमशक्तिमधून मन शांत करण्याची कला तुम्ही साध्य करू शकला तर दुसरे कांहीही करण्याची तुम्हाला जरूरी नाही. फक्त हृदयांतील या शांतीचा जाणीवपूर्वक अनुभव घ्या. मग तुम्ही दुसऱ्या कसल्याही परिस्थितीत अस्वस्थ होणार नाही., कुणावर उठसूठ रागावून वातावरण बिघडेल असे वागणार नाही आणि सूड, द्वेष, क्रोध या सर्व दोषांपासून मुक्त व्हाल.

ज्यांना आत्मसाक्षात्कार मिळालेला नाही त्यांना हे समजावून सांगणे अवघड आहे; त्यांच्या डोक्यांत ते शिरणारच नाही. म्हणून सहजयोग पसरवणे हाच एकमात्र उपाय आहे. हिंदु,

मुसलमान, ख्रिश्चन कुणीही असले तरी त्यांना सहजयोग सांगत चला. आजकाल हिंदु लोकांना सहजयोगाची विशेष जरूरी आहे कारण तेच आपल्या देशाची व आपल्या संस्कृतीची महानता विसरत चालले आहेत. आजचा हा राममंदिराचाच प्रश्न घ्या. अयाध्येमध्ये राममंदिर बांधण्याला विरोध करणाऱ्यांना त्याच ठिकाणी श्रीरामांचा जन्म झाला होता हे मी कसे सांगणार? पण हे जर व्हायब्रेशन्सवर दिसून येत असेल तर फक्त विरोधासाठी विरोध करण्यांत काय अर्थ आहे? हीच रामजन्मभूमि आहे ही व्हायब्रेशन्वरून सिध्द होणारी गोष्ट नाकारणे म्हणजे रामावतरणच नाकारण्यासारखे आहे. आता हा बाबर कोण? तो परदेशातून आला होता व त्याने ही वास्तू बांधलेली नाही तर त्याच्या एका सरदाराने ती बांधली. म्हणूनच त्याला बाबरी-मशिद म्हणतात. पण बाबर परदेशी होता, त्याचा जन्मही भारतात झाला नव्हता आणि परदेशातून तो इकडे स्वारीवर आला होता. फक्त त्याचा मृत्यू भारतात झाला. मला तर पक्के माहित आहे - आणि तुम्हीही तुमच्या हातांवर हे जाणू शकता-की याच ठिकाणी श्रीरामांचा जन्म झाला. मग तिथेच त्यांचे मंदिर बांधण्यांत कांहीच गैर नाही. श्रीरामांचे नुसते नामही शांति-समाधान देणारे आहे, मीसुद्धा त्यांचे नाम आदराने घेते. तोच प्रकार काश्मीरमध्ये मोहम्मदसाहेबांच्या केसा(बाल) वरून झाला. पण लोकांना त्यांतील सत्य जाणून घ्यायची तयारी नाही. मी एकदा काश्मीरमध्ये कारमधून फिरत असताना अचानक मला प्रचंड व्हायब्रेशन्स जाणवल्या. म्हणून रस्ता सोडून त्याबाजूला गाडी नेण्यास झायव्हरला सांगितले; त्याला अर्थातच कांही समजले नाही; पण पुढे गेल्यावर एका लहानशी वस्ती लागली. ते मुसलमान लोक होते. त्यांच्याकडे चौकशी केल्यावर समजले की त्या गावांत 'हजरत-बल' होता; पण मुसलमानांना जसे श्रीराम समजत नाहीत तसेच हिंदूंना मोहम्मदसाहेब समजत नाहीत. दोन्ही लोक आपआपली दुकाने मांडून बसले आहेत पण दोघांकडे विक्रीसाठी ठेवलेल्या वस्तू एकच आहेत ही गोष्ट त्यांच्या लक्षांत येत नाही. अल्लाचे नांव घेणाऱ्या लोकांना अल्ला हे विष्णूचेच रूप आहेत हे माहित नाही. आणि तेच श्रीराम म्हणून अवतार घेऊन आले हे फक्त सहजयोगीच जाणू शकतात. आतां



मी बोलतानाही तुम्ही माझ्याकडे हात करून हे पाहिले तर तुम्हालाही ते समजेल. म्हणजे श्रीराम हेच अल्लाही आहेत हे लक्षांत न घेण्याचा मूर्खपणा ते लोक करत आहेत असेच म्हटले पाहिजे आणि हिंदु-मुसलमान म्हणून भांडत आहेत. आत्मसाक्षात्कार न मिळाल्याने हा प्रश्न विकट झाला आहे. राजकारणी, पुढारी, कॅबिनेटमधिल अधिकारी लोक आत्मसाक्षात्कारी असते तर त्यांच्याशी आपण हे सर्व बोलू शकलो असतो; हा वाद घालणे हाच मूर्खपणा आहे हे त्यांना समजावले असते आणि तिथे श्रीराम मंदिर उभारणें योग्यच आहे हे त्यांना पटले असते. म्हणून हे सर्व लोक सहजयोगी झाले पाहिजेत.

कांही लोक मला एकदा सांगत होते की त्यांनी कांही महंत-मंडळींना जागृति दिली आणि ते सर्वजण expose झाले. हे होणारच; मग ते लोक ख्रिश्चन असोत वा कुठल्याही पंथाचे असोत. अशा लोकांना फक्त व्हायब्रेशन्स देणेच चांगले. माझ्या प्रेमापोटी 'तुम्ही आत्मसाक्षात्कारी नाहीत' असे मी त्यांना सांगू शकत नाही, आणि 'तुम्हाला श्रीराम किंवा मोहम्मदबद्दल कांही बोलण्याचा अधिकार नाही' असेही त्यांना म्हणू शकत नाही. ते अवतारी पुरुष त्यांना समजण्याच्या खूप पलिकडे आहेत. हाच ज्ञानी आणि अज्ञानी माणसांमधील फरक; फार पूर्वी ही मोठी दरी होती कारण आत्मसाक्षात्कार मिळालेला एखादाच असायचा, आणि इतरेजना त्यांचा छळ करायचे. पण आता तुम्ही मोठ्या संख्येचे आहात. तरीही तुमचे सर्वजण ऐकतीलच असे नाही म्हणूनच मी तुम्हाला विनंति करते की जितक्या लोकांना जागृति देता येईल तेवढ्यांना द्या. वरून अध्यात्मिक दिसणाऱ्या लोकांच्या मागे लागू नका. प्रेम वरवरचे असून चालत नाही त्याचे अंतरंग शुद्ध असते तोच प्रेमाची शांति मिळवतो. तसा प्रयत्न करून स्वतःला सुधारायचा अभ्यास करत चला. राग-लोभ इ. तुमच्या मनांत असले तर कार्य होणार नाही. परमेश्वरी प्रेम खऱ्या अर्थाने समजण्यासाठी तुम्हाला आधी अबोधिततेचे महत्त्व समजले पाहिजे. लहान मुले अबोधित असतात म्हणून मी त्यांच्यावर प्रेम करते.

आजकाल सगळीकडे भ्रष्टाचार माजला आहे व एखाद्या संसर्जन्य रोगासारखा फैलावत आहे. लोक पैशाच्या मार्गे घावत असल्यामुळे भ्रष्टाचार चालतो. गुपचूप पूजून ठेवलेला हा पैसा कधी कधी अचानक गडप होतो किंवा चोरीला जातो किंवा भ्रष्टाचार उघडकीला येऊन शिक्षा मिळते. पण महत्त्वाची गोष्ट म्हणजे हे कां होतं हे बघणे. आश्चर्य म्हणजे गरीब माणसांपेक्षा श्रीमंतांना पैशाचा लोभ अधिक असतो. एक तर गरीब माणूस देवाला घाबरतो पण श्रीमंतांना पैशाचीच चटक लागते. आपल्यासारख्या देशांत हा नवा रोग फोफावत आहे ही आश्चर्याची गोष्ट आहे. सहजयोगातही त्याचा शिरकाव झाला आहे व कांही जण सहजयोगातही धंदा करू लागले आहेत व पैसा कमवत आहेत. हा उजव्या बाजूकडचा दोष आहे आणि त्यामुळे लोक त्याचे समर्थन करू पाहतात. या भ्रष्टाचारामुळे देशाचे फार नुकसान होणार आहे; आणि विकास साधणें अशक्य होणार आहे. पण तुमच्या हृदयांत देशाबद्दल खरोखर प्रेम असेल तर तुम्ही या गैरमार्गाकडे वळणार नाही. पण सध्या ह्या प्रेमाचीच उणीव आहे; प्रेम म्हणजे काय हेच लोकांना कळनासे झाले आहे. आपल्या मुलांवरही कांही लोक असे प्रेम करतात की बिचाऱ्याच्या आयुष्याचे नुकसान करतात. खरे तर प्रेमाला कसली मर्यादा नसते; ते अमर्याद, असीम आहे; हे प्रेम संबंध जगाला व्यापणारे आहे, सृष्टीमधे ते पसरलेले आहे, तुम्ही फक्त त्याचे वाहक बनावचे आहे (Agents of Love). तुम्हाला तसे बनण्याचा पूर्ण अधिकार आहे आणि तुम्हीच ते सगळीकडे पोचवू शकता. पण इथे सुध्दा पैशाच्याच मार्गे असलेले लोक मला दिसतात. पैसा हा प्रेमाचा शत्रू आहे. मी अगदी निक्षून सांगते की तुम्हाला पैशामधे इंटरेस्ट असेल तर तुम्ही सहजयोगात कांहीही प्रगति मिळवू शकणार नाही. मला तर पैसा समजतच नाही, त्याच्यांत इंटरेस्ट घेणे तर दूरच. मला पैसे मोजता येत नाहीत म्हणून लोक हसतात; पण पैशाकडे पाहून ते किती आहेत हे मी नक्की सांगू शकेन. पैशाहून कितीतरी अधिक चांगल्या व सुंदर गोष्टी जीवनांत आहेत; उदा. चांगली मुले, चांगली माणसे, सुंदर फुले सगळ्या जगभर आढळतात; मग पैशाकडेच कशाला लक्ष द्यायचे? तो

जसा येतो तसाच जातोही. पण त्याचे आकर्षण फार जबरदस्त असते. भारताचाही भ्रष्टाचारी देशामधे फार वरचा क्रमांक आहे. असे म्हटले जाते. म्हणून तुम्ही या बाबतीत काळजी घ्या; सहजयोगांत तुम्हाला पैसा कधीही कमी पडणार नाही याची खात्री बाळगा. पैसापेक्षा तुम्ही किती लोक सहजयोगांत आणले याला महत्त्व आहे. ही विनामूल्य पण अत्यंत आनंददायी गोष्ट आहे.

सहजयोग्याचे जीवन म्हणजे आनंदी आनंद आणि पूर्ण मुक्तता; कसलीही चिंता नाही, तुमच्यावर अवलंबून असे कांहीच नाही. अगदी गरीबीत असाल तरी आनंदाला कांही कमी नाही. श्रीमंत लोकांना, विशेषतः परदेशांतील श्रीमंतांना मानसिक ताणतणावाखालीच दिवस काढावे लागतात, विचित्र समस्या असतात, कांहीजण वैतागून आत्महत्या करून घेतात. शिवाय तुम्हाला नसत्या फॅशनच्या फंदात पडावेसे वाटणार नाही. एरवी लोक वेड्यासारखे फॅशनच्या मागे लागतात. तुम्ही सहजयोगी असल्यामुळेच त्यांच्याहून वेगळे असता. तरीही त्यांचा तिरस्कार न करता त्यांच्याबद्दल तुम्ही करुणा बाळगली पाहिजे; त्यांना नीटपणे समजावून जीवनांत उच्च असे कांहीतरी मिळवण्याची प्रेरणा द्या, आत्मसंस्कार मिळवण्याचे महत्त्व सांगा. हा काळ आता हे घटित होण्यासाठी योग्य आहे. पण तुम्ही कार्यरत झाले पाहिजे. तुम्ही हे मोठ्या प्रमाणात करू शकता. मी बरेच लोक सामाजिक कार्य करणारे पाहिले आहेत, त्यांचा पिंड अध्यात्मिक नसतो आणि त्यांना आत्मसाक्षात्कारही झालेला नसतो. पण अनाथ, गरीबांना आसरा देण्यासारख्या सामाजिक कार्यामुळे ते प्रसिद्धिला आलेले असतात. पण तुमच्यातील प्रेमशक्ति कार्यान्वित झाली की इतक्या मोठ्या प्रमाणावर लोकांना सहजयोग समजेल की तुम्हीच आश्चर्यचकित व्हाल. सहजयोगात खूप चांगले लोक आहेत पण त्याचा परिणाम दिसून आला पाहिजे; लोकांना तुमचे प्रेम समजले पाहिजे. त्यासाठी सर्वप्रथम तुम्ही क्षमाशील झाले पाहिजे; लोक मूर्ख असले तरी तुम्ही त्यांना क्षमा केली पाहिजे; शहाणपण बाळगून त्यांच्याशी वागा आणि त्यांच्या फॅशन वा ग्रुप बनवण्याच्या भुलथापांना बळी पडू नका. तुम्ही सहजयोगी आहात हे विसरू नका; तुमच्याबरोबर आणखी

असले वा नसले तरी बिघडत नाही. तुम्ही उच्च स्तरावर पोचलेले लोक आहांत म्हणून तुमच्या दैनंदिन व्यवहारांतही प्रेम व्यक्त झाले पाहिजे; लोकांशी वागताना ते प्रेम दिसले पाहिजे; त्या प्रेम-व्यवहाराने लोकांना समाधान वाटले पाहिजे. दुसऱ्यांशी भांडणे. दुसऱ्यांना खाली खेचण्याचा प्रयत्न करणे, दुसऱ्यांना फसवणे इ. प्रकार सहजयोग्यांना शोभत नाहीत, तसले विचारही तुमच्या डोक्यांत येता कामा नये. हे मिळवलेत की तुम्ही स्वच्छ, निर्मल झालात असे म्हणता येईल. मग कुणीही तुम्हाला धक्का लावू शकणार नाही. या भावनेने तुम्ही आत्मसन्मान करू शकाल व स्वतःला बरोबर ओळखू शकाल. साक्षात्कारी पुरुष अशी स्वतःची ओळख विसरून चालणार नाही; त्या दृष्टीने आपण काय केले पाहिजे, कसे वागले पाहिजे हे लक्षांत ठेवा. तुम्ही वेड्यासारखे, कशाच्या तरी मार्गे लागलेल्या किंवा स्पर्धेत उतरलेल्या लोकांसारखे वागून चालणार नाही. परमचैतन्याच्या आशीर्वादासाठी तुम्ही सतत लायक राहिले पाहिजे; लहान मुलासारखे बनलात तरच तुम्ही परमेश्वराच्या राज्यांत प्रवेश करू शकाल असे ख्रिस्त म्हणाले होते. तुम्ही परमेश्वराच्या साम्राज्यांतच आहात; इथेही लहान मुलांसारखे रहा; सहजामधे रहा. तुमच्याकडून आणखी जास्त विशेष असे कांही मी मागत नाही. आपल्या प्रेमशक्तीमधे परमात्म्याचा प्रकाश आला की समस्त जग बदलायला वेळ लागणार नाही. त्याची प्रचीति पाहून तुम्हीच आश्चर्यचकित व्हाल. मला तो मार्ग दिसला आणि आज त्याला बहार येत आहे. मला खात्री आहे की तुम्ही सर्वांनी मनापासून मला साथ दिली तर सहजयोगातून प्रचंड कार्य घडून येईल.

मी जे कांही सांगितले त्याचा परत गेल्यावर गांधीयाने विचार करा, त्याचबरोबर आत्मपरिक्षण करा आणि या जन्मांत आपण काय मिळवणार आहोत हे समजूतदारपणे लक्षांत घ्या; सहजयोगी म्हणून आपण काय करू शकतो याचे भान ठेवा. मग तुम्हाला काय करायला हवे हे जाणवेल आणि तुमच्याकडून खूप महान कार्य घडेल.

परमेश्वराचे तुम्हा सर्वांना अनंत आशीर्वाद

